पाठ्यपुस्तक : स्पर्श भाग-1

गद्य-खंड

1 धूल

➤ रामविलास शर्मा

पाठ का सार

प्रस्तुत पाठ का शीर्षक 'धूल' एक महान उद्देश्य लिए हुए है। लेखक भारत को गाँवों का देश ही मानता है। ग्राम्य संस्कृति की गरिमा को अक्षुण्ण रखने के उद्देश्य से वह 'धूल' के बहाने गाँव, मिट्टी के घरों, कच्ची धूल भरी सड़कों, खेतों, खलिहानों, बगीचों, तालाबों के प्रति हमारा ध्यान आकृष्ट कराना चाहता है। जन्मभूमि अथवा मातृभूमि के प्रति हमारे मोह को बनाए रखना चाहता है। इसीलिए वह राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की रचना के अंश को उद्धृत करता है जिसमें गुप्त जी ने 'धूलि भरे हीरे' का अर्थ स्पष्ट किया है, जिसका अर्थ है, वह शिशु जो मिट्टी पर चलकर, दौड़कर, लोट-पोटकर बढ़ता है और बाद में दुनिया के लिए आदर्श बनता है। गांधी, गौतम, विनोबा और जयप्रकाश बनता है।

प्राय: पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में आकर भारत की नई पीढ़ी के नौजवान धूल से परहेज़ करते देखे जाते हैं। लेखक इसी विडंबना पर अफ़सोस करता है। वह इसी बात का विरोध करता है। लेखक यह सिद्ध करना चाहता है कि भारत की गरिमा शहरों की चकाचौंध पर नहीं टिकी है, बल्कि आज भी इसकी गरिमा गाँवों पर टिकी है। शहरी जीवन से धूल अथवा मिट्टी समाप्त होती जा रही है। पक्के मकान, पक्की सड़कें आदि के कारण अब शहरों में मिट्टी अथवा धूल के दर्शन नहीं होते, जबकि पूरे देश को आहार गाँवों से ही प्राप्त होता है। इसलिए हम चाहकर भी धूल से परहेज़ नहीं कर सकते।

'धूल' के महत्व पर प्रकाश डालकर लेखक यहाँ शारीरिक शक्ति के महत्व को भी दर्शाना चाहता है। इसीलिए प्रकारांतर से लेखक गाँव, गोधूलि, गायों, गोपालों, अखाड़ों आदि की हमें याद दिलाता है। लेखक ने स्पष्ट उल्लेख तो नहीं किया है, लेकिन माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'पुष्प की अभिलाषा' के आधार पर मातृभूमि पर शीश चढ़ाने की भावना से भी उत्कंठित है। लेखक का मन यहाँ देशभक्ति की भावना से ओत-प्रोत है। पूरे निबंध के केंद्र में देशभक्ति की भावना है। अत: यह कहा जा सकता है कि लेखक ने देश की मिट्टी को पूजनीय मानकर 'धूल' से संबंधित बातें कही हैं।

धूल या मिट्टी के प्रति हमारी प्राचीन विचारधारा काफ़ी महत्व रखती है। देश में अपसंस्कृति सिर उठाने लगी है। इसका एकमात्र कारण मिट्टी से हमारा लगाव कम होते जाना है। पुन: अपनी प्राचीन संस्कृति का आदर करने के लिए लेखक ने यह कहना अनिवार्य समझा है– ''हमारी देशभक्ति धूल को माथे से न लगाए तो कम-से-कम उस पर पैर तो रखे।'' यहाँ देशभक्ति की भावना फीकी पड़ने पर व्यंग्य किया गया है।

लेखक को यह भी दुख है कि आज हम चमचमाते काँच से आकर्षित हो रहे हैं, किंतु धूल में पड़े हुए हीरे से नहीं। हमें यह सोचना चाहिए कि आखिर वह धूल भरा ही क्यों न हो, लेकिन हीरा तो हीरा ही होता है। काँच चमचमाता हुआ ही क्यों न हो, किंतु वह काँच ही है।

शब्दार्थ एवं टिप्पणियाँ

खरादा हुआ = सुडौल और चिकना बनाया हुआ, तराशा हुआ; **रेणु** = धूल, रजकण; **पार्थिवता** = पृथ्वी से संबंधित, मिट्टी संबंधी, निर्जीवता; **अभिजात** = कुलीन; **प्रसाधन-सामग्री** = शृंगार की सामग्री; **गोधूलि** = सायंकाल जंगल से लौटते समय गायों के खुर से उड़ती हुई धूल; **संसर्ग** = संपर्क; **कनिया** = गोद; **गात** = शरीर; **लरिकान** = बच्चे, लड़के; **नौबत** = हालत, दशा; **सिझाई** = पकाई हुई; **निर्द्वंद्व** = निश्चिंत, जिसका कोई विरोधी न हो; **असारता** = साररहित, जिसका कोई सार न हो; **सूक्ष्मबोध**= बातों की गहराई को समझने की क्षमता; **अमराइयों** = आम के बाग; **नक्षत्र पथ** = नक्षत्रों का मार्ग; **विडंबना** = विसंगति, छलावा; **बाटे** = रास्ते; **नीच को धूरि समान** = धूल के समान तुच्छ; **यूलिसिस** = होमर के महाकाव्य 'ओडेसी' का एक प्रमुख पात्र जो कठिनाइयों से संघर्ष करनेवाले व्यक्ति का प्रतीक बन गया है; **प्रवास** = परदेश में रहना; **इथाका** = यूनान का एक स्थान; **व्यंजना** = शब्द की वह वृत्ति या शक्ति जिससे उसके सामान्य अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ का बोध होता है; **असूया** = ईर्ष्या; **छायावादी दर्शन** = प्रकृति और सृष्टि के रहस्यों को अति गूढ़ भावों में व्यंजित करना; **कांति** = चमक, आभा।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

समेटिव असेसमेंट के लिए

पाठ्यपुस्तक के प्रश्नोत्तर

(क) मौखिक

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए–

1. हीरे के प्रेमी उसे किस रूप में पसंद करते हैं?

उत्तर : हीरे के प्रेमी उसे साफ़-सुथरा और खरादा हुआ पसंद करते हैं, ताकि उसकी चमक-दमक सबको आकर्षित करती रहे।

2. लेखक ने संसार में किस प्रकार के सुख को दुर्लभ माना है?
[CBSE 2010 (Term-I)]

उत्तर : लेखक ने अपनी मातृभूमि की मिट्टी में खेलना, अखाड़े की मिट्टी से स्वयं को सराबोर करने को संसार का सबसे बड़ा एवं दुर्लभ सुख माना है।

3. मिट्टी की आभा क्या है? उसकी पहचान किससे होती है?

उत्तर : मिट्टी की आभा उसकी धूल है, जो विविध रूपों में दृष्टिगोचर होती है। संसार के सभी सारतत्व मिट्टी से ही प्राप्त होते हैं। मिट्टी की पहचान उसके रंग, रूप, धूल से होती है।

(ख) लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25–30 शब्दों में) लिखिए–

1. धूल के बिना किसी शिशु की कल्पना क्यों नहीं की जा सकती?

उत्तर : धूल के बिना किसी शिशु की कल्पना इसलिए नहीं की जा सकती क्योंकि उसका बचपन धूल के किसी-न-किसी स्वरूप में ही बीतता है।

2. हमारी सभ्यता धूल से क्यों बचना चाहती है?

उत्तर : हमारी सभ्यता धूल से इसलिए बचना चाहती है, ताकि स्वच्छता बनी रहे। धूल में सनने व खेलने की अपेक्षा साफ़-सुथरा रहना अधिक पसंद करती है।

3. अखाड़े की मिट्टी की क्या विशेषता होती है?

उत्तर : अखाड़े की मिट्टी को तेल और मट्ठे से सिझाकर देवता पर चढ़ाया जाता है। इस मिट्टी को शरीर पर मलने से मांसपेशियाँ मज़बूत होती हैं, जिससे व्यक्ति के अंदर विश्व विजयी होने का आत्मविश्वास उत्पन्न होता है।

4. श्रद्धा, भक्ति, स्नेह की व्यंजना के लिए धूल सर्वोत्तम साधन किस प्रकार है?

उत्तर : धूल के प्रति श्रद्धा उसे मस्तक पर लगाने से प्रकट होती है। भक्ति में हम धूल की प्रतिमा बनाकर उसकी आराधना करते हैं। स्नेह का भाव यह है कि हम धूल-धूसरित बच्चे को हृदय से लगाते हैं, अपना प्यार प्रकट करते हैं।

5. इस पाठ में लेखक ने नगरीय सभ्यता पर क्या व्यंग्य किया है? **[CBSE 2010 (Term-I)]**

उत्तर : लेखक ने व्यंग्य स्वरूप कहा है कि नगरीय सभ्यता आसमान में अपना घर बनाना चाहती है, ताकि धूल-मिट्टी से बची रह सके। वह धूल-धूसरित बच्चे को गोद में नहीं लेना चाहती क्योंकि उसके नकली सलमे-सितारे से जड़े वस्त्र धुँधले या मैले हो जाएँगे।

(ख) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50–60 शब्दों में) लिखिए–

1. लेखक 'बालकृष्ण' के मुँह पर छाई गोधूलि को श्रेष्ठ क्यों मानता है?

उत्तर : लेखक बालकृष्ण के मुँह पर छाई गोधूलि को इसलिए श्रेष्ठ मानता है क्योंकि ग्रामीण शिशु की धूल के बिना तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। जिस धूल में सनकर बच्चा आभूषित होता है, उसकी छटा दुर्लभ होती है। जो धूल बच्चे के मुँह पर लगी होती है, वह मनुष्य की नश्वरता को और अधिक स्पष्ट कर देती है।

2. लेखक ने धूल और मिट्टी में क्या अंतर बताया है?

उत्तर : लेखक ने कहा है कि मिट्टी और धूल में उतना ही अंतर है जितना शब्द और रस में, देह और प्राण में, चाँद और चाँदनी में होता है। मिट्टी की आभा का नाम धूल है और मिट्टी के रंग-रूप की पहचान धूल से ही होती है।

3. ग्रामीण परिवेश में प्रकृति धूल के कौन-कौन से सुंदर चित्र प्रस्तुत करती है?

उत्तर : धूल को गोधूलि के रूप में अमरत्व प्राप्त है। यह धूलि जहाँ अमराइयों के पीछे छिपे हुए सूर्य की किरणों में सोने को भी मिट्टी कर देती है, वहीं सूर्यास्त के बाद लीक पर गाड़ी के निकल जाने के बाद यह धूलि रुई के बादल की भाँति अथवा ऐरावत हाथी के नक्षत्र-पथ की भाँति स्थिर रह जाती है। चाँदनी रात में मेले जाने वाली गाड़ियों के पीछे जो कवि-कल्पना की भाँति उड़ती चलती है–वह धूल ही है।

4. 'हीरा वही घन चोट न टूटे'–का संदर्भ पाठ के आधार पर स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : लेखक का 'हीरा वही घन चोट न टूटे' से अभिप्राय है कि जिस प्रकार सच्चा हीरा कितनी ही चोट करने पर भी नहीं टूटता है,

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

उसी प्रकार धूल में पला-बढ़ा मातृभूमि का प्रेमी अपने मार्ग पर सदैव अडिग रहता है। वह अपने कार्यों से मृत्योपरांत मिट्टी में मिलने पर भी अमर बना रहता है। ये ही धूल भरे हीरे हैं, जिनकी कांति सदैव बनी रहती है।

5. धूल, धूलि, धूली, धूरि और गोधूलि की व्यंजनाओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : जीवन में इनकी व्यंजनाएँ इस प्रकार हैं–जीवन का यथार्थवादी गद्य 'धूल' है। जीवन के यथार्थ की कविता 'धूलि' है। 'धूली' जीवन के छायावादी दर्शन के समान है, जिसकी वास्तविकता का केवल अनुमान लगाया जा सकता है। 'धूरि' शब्द से भारतीय लोक संस्कृति की झलक मिलती है। 'गोधूलि' गाँव की अपनी संपत्ति है, जो शहरों के हिस्से नहीं पड़ती।

6. 'धूल' पाठ का मूलभाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'धूल' पाठ का मूलभाव भारतीय सभ्यता के मूल भाव को समझना है, बच्चों को देश-प्रेम, आत्मोत्सर्ग एवं प्राचीन परंपरा से अवगत कराना है, ग्रामीण जीवन-शैली के महत्व को स्पष्ट करना है तथा विदेशी संस्कृति को गौण ठहराना है।

7. कविता को विडंबना मानते हुए लेखक ने क्या कहा है?

उत्तर : कवियों द्वारा 'गोधूलि' का वर्णन अनेक प्रकार से किए जाने पर किसी पुस्तक-विक्रेता द्वारा शहर में 'गोधूलि बेला' पर आमंत्रित किए जाने को लेखक ने एक विडंबना माना है, क्योंकि शहरों में गोधूलि कहाँ?

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए–

1. फूल के ऊपर जो रेणु उसका शृंगार बनती है, वही धूल शिशु के मुँह पर उसकी सहज पार्थिवता को निखार देती है।

उत्तर : जिस तरह खिला हुआ फूल धूल के हलके से आवरण से सजीव हो उठता है, उसकी सुंदरता मोहक बन जाती है ठीक उसी प्रकार शिशु के मुँह की सुंदरता भी धूल-धूसरित होकर अत्यंत आकर्षक बन जाती है।

2. 'धन्य-धन्य वे हैं नर मैले जो करत गात कनिया लगाय धूरि ऐसे लरिकान की।' लेखक इन पंक्तियों द्वारा क्या कहना चाहता है ?

उत्तर : लेखक कहते हैं कि वे लोग धन्य हैं जो धूल-धूसरित बच्चों से प्यार करते हैं। वर्तमान नगरीय संस्कृति में तो धूल को गर्द समझा जाता है, किंतु वे लोग महान हैं जो ग्रामीण बच्चों से प्यार करते हैं एवं उनके प्रति जिनमें वात्सल्य भाव विद्यमान है।

3. मिट्टी और धूल में अंतर है, लेकिन उतना ही, जितना शब्द और रस में, देह और प्राण में चाँद और चाँदनी में।

उत्तर : मिट्टी जीवन का स्थूल व स्थायी आधार है, मूर्त रूप है। उसकी सूक्ष्मता उसके रूप, रस, गंध और स्पर्श के आनंद में बसती है। जैसे–शब्द में अर्थ और स्वर का आनंद, देह में प्राण की चेतना और चाँद में चाँदनी की उज्ज्वलता ही महत्वपूर्ण है, ठीक वैसे ही उजली धूल मिट्टी का शृंगार है, जीवन है।

4. हमारी देश-भक्ति धूल को माथे से न लगाए तो कम-से-कम उस पर पैर तो रखे।

अथवा

विदेशों को न अपनाकर, अपने देश में अपनी मिट्टी पर ही रहें। विदेशी सभ्यता न अपनाए।

उत्तर : शहरी संस्कृति को महत्व देने के कारण अगर हम धूल को माथे का तिलक बनाकर देशभक्ति प्रकट करने में संकोच करने लगे हैं, तो कम से कम हमें दूसरे रूप में अपनी संस्कृति का सम्मान एवं देशभक्ति का भाव अवश्य प्रकट करना चाहिए। हमें ग्रामों, ग्रामवासियों का सम्मान करना चाहिए, उनसे संपर्क बनाकर रखना चाहिए ताकि हमारी पहचान बनी रहे, हम अपना गौरव बनाए रहें।

5. वे उलटकर चोट भी करेंगे और तब काँच और हीरे का भेद जानना बाकी न रहेगा।

उत्तर : लेखक का कहना है कि खेतों में काम करके सबको अन्न देने वाले किसान और उनके बच्चे धूल से सने रहते हैं और शहरी लोगों की उपेक्षा का शिकार होते हैं, परंतु धूल से भरे इन हीरों की शक्ति और विद्रोह का अनुमान जब आडंबरपूर्ण जीवन जीने वालों को लगेगा, तो वे कहीं के नहीं रहेंगे। उन्हें अपनी असलियत और ग्रामीणों की महानता का ज्ञान हो जाएगा।

(ग) भाषा-अध्ययन

(क) निम्नलिखित शब्दों के उपसर्ग छाँटिए–

संसर्ग, उपमान, संस्कृति, दुर्लभ, निर्द्वंद्व, प्रवास, दुर्भाग्य, अभिजात, संचालन।

शब्द	उपसर्ग	मूल शब्द
संसर्ग	सम्	सर्ग
प्रवास	प्र	वास
उपमान	उप	मान
दुर्भाग्य	दुर्	भाग्य
संस्कृति	सम्	कृति
अभिजात	अभि	जात
दुर्लभ	दुर्	लभ
संचालन	सम्	चालन।
निर्द्वंद्व	निर्	द्वंद्व

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

(ख) लेखक ने इस पाठ में धूल चूमना, धूल माथे पर लगाना, धूल होना जैसे प्रयोग किए हैं। धूल से संबंधित अन्य पाँच प्रयोग और बताइए तथा उन्हें वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

1. धूल चाटना = हार मानना = मायावती ने उत्तर प्रदेश के चुनाव में सारे विपक्षी दलों को धूल चटा दी।
2. धूल फाँकना = मारा-मारा फिरना = नौकरी से निकाले जाने के कारण वह इन दिनों धूल फाँक रहा है।
3. आँखों में धूल झोंकना = धोखा देना/चकमा देना = रवि की आँखों में धूल झोंककर तुमने अपना ही नुकसान किया है।
4. धूल में मिलना = अस्तित्व समाप्त होना, मिट जाना = अब तो वह परिवार धूल में मिल चुका है।
5. धूल जमना = उपयोग न होना, प्रयोग में न लाया जाना = तुम्हारे सितार पर कब तक धूल जमती रहेगी? उसे कभी-कभार बजाते भी रहो।

सी.सी.ई. प्रणाली पर आधारित अन्य महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर

(क) गद्यांश पर आधारित प्रश्नोत्तर

I. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए नीचे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– [CBSE 2010 (Term-I)]

जो बचपन में धूल से खेलता है, वह जवानी में अखाड़े की मिट्टी में सनने से कैसे वंचित रह सकता है? रहता है तो उसका दुर्भाग्य है और क्या? यह साधारण धूल नहीं हैं, वरन् तेल और मट्ठे से सिझाई हुई वह मिट्टी है, जिसे देवता पर चढ़ाया जाता है। संसार में ऐसा सुख दुर्लभ है। पसीने से तर बदन पर मिट्टी ऐसे फिसलती है, जैसे आदमी कुआँ खोदकर निकला हो। उसकी मांसपेशियाँ फूल उठती हैं, आराम से वह हारा होता है, अखाड़े में निर्द्वंद्व चारों खाने चित्त लेटकर अपने को विश्वविजयी समझता है। मिट्टी उसके शरीर को बनाती है क्योंकि शरीर भी तो मिट्टी का ही बना हुआ है।

1. धूल में बचपन व्यतीत करने वाले का सबसे बड़ा दुर्भाग्य क्या है?

उत्तर : धूल में बचपन व्यतीत करने वाले का सबसे बड़ा दुर्भाग्य तब होता है जब वह जवानी में अखाड़े की धूल या मिट्टी से सनने से वंचित रह जाए।

2. लेखक ने अखाड़े की मिट्टी का महत्व कैसे स्पष्ट किया है?

उत्तर : लेखक ने अखाड़े की मिट्टी का महत्व स्पष्ट करते हुए कहा है कि तेल और मट्ठे से सिझाई गई उस मिट्टी को देवता पर चढ़ाया जाता है। उस मिट्टी को शरीर पर लगाने से उसकी मांसपेशियाँ फूलती हैं।

3. अखाड़े की मिट्टी का स्पर्श करने वाले पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर : अखाड़े की मिट्टी का स्पर्श करने वाले की मांसपेशियाँ फूल जाती हैं। मिट्टी उसके शरीर को सुगठित बनाती है।

II. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– [CBSE 2010 (Term-I)]

हमारी सभ्यता इस धूल के संसर्ग से बचना चाहती है। वह आसमान में अपना घर बनाना चाहती है, इसलिए शिशु भोलानाथ से कहती है, धूल में मत खेलो। भोलानाथ के संसर्ग से उसके नकली सलमे-सितारे धुँधले पड़ जाएँगे। जिसने लिखा था- ''धन्य-धन्य वे हैं नर मैले जो करत गाता कनिया लगाय धूरि ऐसे लरिकान की'', उसने भी मानो धूल भरे हीरों का महत्त्व कम करने से कुछ उठा न रखा था। 'धन्य-धन्य' में ही उसने बड़प्पन को विज्ञापित किया, फिर 'मैले' शब्द से अपनी हीनभावना भी व्यंजित कर दी, अंत में 'ऐसे लरिकान' कहकर उसने भेद-बुद्धि का परिचय भी दे दिया। वह हीरों का प्रेमी है, धूलि भरे हीरों का नहीं।

1. 'नकली सलमे सितारे' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : 'नकली सलमे-सितारे' का अर्थ है– आधुनिक लोगों की बाहरी चमक दमक और दिखावा जो नकली सलमे-सितारों वाले वस्त्र पहनते हैं। वे अपने बच्चों को मिट्टी में खेलने से मना करते हैं, ताकि धूल-धूसरित बच्चा उठाने से उनके वे वस्त्र गंदे न होने पाएँ।

2. शिशु भोलानाथ को किस बात की मनाही है और क्यों?

उत्तर : शिभु भोलानाथ को धूल में खेलने की मनाही है। क्योंकि धूल में खेलने से उसका शरीर और कपड़े मैले हो जाएँगे। फिर उसे गोद मे उठाने से आधुनिक माता-पिता के कपड़े खराब हो जाएँगे।

3. हीरों के प्रेमी ने 'धूल भरे हीरों' का महत्व कैसे कम कर दिया?

उत्तर : हीरों के प्रेमी ने बच्चे जो 'धूल में हीरे' कहे जाते हैं, की अपेक्षा रत्न-जवाहरातों को अधिक महत्व देकर धूल भरे हीरों को गोद में लेने से हिचकते हैं। इसलिए धूल भरे हीरों का महत्व कम हो जाता है।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

III. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए नीचे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– [CBSE 2010 (Term-I)]

हिंदी कविता की सबसे सुंदर पंक्तियों में से एक है–''जिसके कारण धूलि भरे हीरे कहलाए।'' हीरे के प्रेमी तो शायद उसे साफ़-सुथरा, खरादा हुआ, आँखों में चकाचौंध पैदा करता हुआ देखना पसंद करेंगे। परंतु हीरे से भी कीमती जिस नयन तारे का जिक्र इस पंक्ति में किया गया है वह धूलि भरा ही अच्छा लगता है। जिसका बचपन गाँव के गलियारे की धूल में बीता हो, वह इस धूल के बिना किसी शिशु की कल्पना कर ही नहीं सकता। फूल के ऊपर जो रेणु उसका शृंगार बनती है, वह धूल शिशु में मुँह पर उसकी सहज पार्थिवता को निखार देती है। अभिजात वर्ग ने प्रसाधन-सामग्री में बड़े-बड़े आविष्कार किए, लेकिन बालकृष्ण के मुँह पर छाई हुई वास्तविक गोधूलि की तुलना में वह सभी सामग्री क्या धूल नहीं हो गई?

1. यहाँ 'धूलि भरे हीरे' किन्हें कहा गया है? क्यों?

उत्तर : यहाँ धूलि भरे हीरे मिट्टी में खेलते बच्चों को कहा गया है। ये बच्चे हीरे इसलिए हैं क्योंकि आगे चलकर ये ही भारत के सही सपूत साबित हो सकते हैं, तब उन्हें हीरे से कम नहीं आँका जा सकेगा। श्रीकृष्ण भी उनमें से एक हीरा थे।

2. 'हीरे के प्रेमी' किन्हें कहा गया है?

उत्तर : 'हीरे के प्रेमी' आधुनिक सभ्य लोगों को कहा गया है जो साफ़-सुथरे, तराशे हुए चमकदार हीरे को अधिक पसंद करते हैं।

3. धूल किस प्रकार शृंगार करती है?

उत्तर : धूल पुष्पों के ऊपर जमकर, शिशु के मुँह पर स्वाभाविक रूप से लिपटकर शृंगार करती है।

4. अभिजात वर्ग के सौंदर्य बोध पर लेखक ने क्या टिप्पणी की?

उत्तर : अभिजात वर्ग के सौंदर्य-बोध पर लेखक ने टिप्पणी की है कि आज का यह वर्ग साफ़-सुथरे बच्चों को पसंद करता है। नकली चमकदार हीरे उसकी पसंद हैं। मेहनतकश किंतु मैले-कुचैले या धूल धूसरित लोग उसे पसंद नहीं हैं।

IV. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– [CBSE 2010 (Term-I)]

ग्राम-भाषाएँ अपने सूक्ष्म बोध से धूल की जगह गर्द का प्रयोग कभी नहीं करतीं। धूल वह, जिसे गोधूलि शब्द में हमने अमर कर दिया है। अमराइयों के पीछे छिपे हुए सूर्य की किरणों में जो धूलि सोने को मिट्टी कर देती है, सूर्यास्त के उपरांत लीक पर गाड़ी के निकल जाने के बाद जो रुई के बादल की तरह या ऐरावत हाथी के नक्षत्र-पथ की भाँति जहाँ की तहाँ स्थिर रह जाती है, चाँदनी रात में मेले जाने वाली गाड़ियों के पीछे जो कवि-कल्पना की भाँति उड़ती चलती है, जो शिशु के मुँह पर, फूल की पंखुड़ियों पर साकार सौंदर्य बनकर छा जाती है–धूल उसका नाम है।

1. धूल और गर्द के अंतर को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : धूल वह है जो सकारात्मक भाव उत्पन्न करती है। जैसे-गोधूलि, बैलगाड़ी की लीक से उठी धूल है। गर्द वह है जो नकारात्मक भाव उत्पन्न करती है।

2. धूल को कवि कल्पना के समान मानना कहाँ तक उचित है?

उत्तर: धूल को कवि की कल्पना मानना सर्वथा उचित है क्योंकि धूल से हमें कोई विशेष हानि नहीं होती है। उसी से हमें अन्न मिलता है।

3. 'गर्द शब्द का प्रयोग कौन करता है?

उत्तर : 'गर्द' शब्द का प्रयोग शहरी लोग करते हैं। ये लोग 'धूल' से दूर रहकर उसमें पैर रखना भी उचित नहीं समझते।

4. धूल का सौंदर्य कब और कैसे साकार हो उठता है?

उत्तर: गोधूलि के समय शिशु के मुँह पर और फूल की पंखुड़ियों पर धूल का सौन्दर्य साकार हो उठता है।

V. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए– [CBSE 2010 (Term-I)]

'नीच को धूरि समान' वेद-वाक्य नहीं है। सती उसे माथे से, योद्धा उसे आँखों से लगाता है, यूलिसिस ने प्रवास से लौटने पर इथाका की धूलि चूमी थी। यूक्रैन के मुक्त होने पर एक लाल सैनिक ने उसी श्रद्धा से वहाँ की धूल का स्पर्श किया था। श्रद्धा, भक्ति, स्नेह इनकी चरम व्यंजना के लिए धूल से बढ़कर और कौन साधन है? यहाँ तक कि घृणा, असूया आदि के लिए भी धूल चाटने, धूल झाड़ने आदि की क्रियाएँ प्रचलित हैं।

धूल, धूलि, धूली, धूरि आदि की व्यंजनाएँ अलग-अलग हैं। धूल जीवन का यथार्थवादी गद्य, धूलि उसकी कविता है। धूली छायावादी दर्शन है, और धूरि लोक-संस्कृति का नवीन जागरण है। इन सबका रंग एक ही है, रूप में भिन्नता जो भी हो। मिट्टी काली, पीली, लाल तरह-तरह की होती है, लेकिन धूल कहते ही शरत के धुले-उजले बादलों का स्मरण हो आता है। धूल के लिए श्वेत नाम का विशेषण अनावश्यक है, वह उसका सहज रंग है।

1. लाल सैनिक द्वारा धूल का स्पर्श करना किस बात का प्रतीक है?

उत्तर : लाल सैनिक द्वारा धूल का स्पर्श करना उसके द्वारा स्वदेश के प्रति असीमित प्रेम का प्रतीक है।

2. धूल को सती माथे से, योद्धा आँखों से क्यों लगाता है?

उत्तर : धूल को सती माथे से तथा योद्धा अपनी आँखों से इसलिए लगाता है क्योंकि उस मिट्टी का कर्ज़ वह हर हाल में चुकाना चाहता है।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

3. घृणा और असूया भावों के लिए धूल को लेकर किन क्रियाओं का प्रयोग हुआ है? और क्यों?

उत्तर : घृणा और असूया भावों के लिए धूल चाटना, धूल झाड़ना- जैसी क्रियाओं का प्रयोग हुआ है। वह इसलिए क्योंकि उक्त भावों की चरम व्यंजना दिखलाने के लिए ऐसे प्रयोग किए जाते हैं।

(ख) लघूत्तरीय प्रश्नोत्तर

1. लेखक के अनुसार मिट्टी एवं धूल को लेकर मनुष्य का क्या सौभाग्य अथवा दुर्भाग्य हो सकता है?

उत्तर : जो मनुष्य बचपन में धूल से खेला है वह मनुष्य जवानी में अखाड़े की मिट्टी में सनने से वंचित रह जाए तो लेखक के अनुसार यह मनुष्य का दुर्भाग्य है और अखाड़े की मिट्टी में सनना मनुष्य का सौभाग्य है।

2. मनुष्य स्वयं को विश्वविजयी समझने का दम कब और कैसे भर सकता है?

उत्तर : जब मनुष्य अखाड़े में जाकर व्यायाम और कुश्ती करता है तो वह पसीने से तर हो जाता है। उसकी माँसपेशियाँ फूल उठती हैं। उसका शरीर मज़बूत तथा स्वस्थ बन जाता है। वह अखाड़े में चारों खाने चित्त लेटकर अपने को विश्वविजयी समझने का दम भरता है।

3. लेखक ने धूरि को लोक संस्कृति का नवीन जागरण क्यों कहा है?

उत्तर : सती स्त्री धूरि को माथे से, योद्धा उसे आँखों से, सैनिक उसे माथे पर लगाता है। यह श्रद्धा, भक्ति और स्नेह को व्यंजित करने का उत्तम साधन है। इसलिए लेखक धूरि को लोक संस्कृति का नवीन जागरण कहते हैं।

4. गोधूलि को गाँव की संपत्ति मानने के पीछे क्या तर्क है?
[CBSE 2010 (Term-I)]

उत्तर : गोधूलि को गाँव की संपत्ति इसलिए माना जाता है क्योंकि यह धूल शाम के समय गायों के खुरों से उठती है या बैलगाड़ियों के पहियों से उठती है।

5. अखाड़े की मिट्टी में सनी हुई देह से शहरियों को उबकाई क्यों आने लगती है? **[CBSE 2010 (Term-I)]**

उत्तर : शहर के लोगों को अखाड़े की मिट्टी में सनी देह को देखकर उबकाई इसलिए आने लगती है क्योंकि वे धूल से नफ़रत करते हैं, वे मिट्टी में पाँव तक रखना नहीं चाहते।

6. धूल के संपर्क से बचने वाली नगरीय सभ्यता का क्या दुर्भाग्य है? **[CBSE 2010 (Term-I)]**

उत्तर : धूल से बचने वाली नगरीय सभ्यता का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है कि जिस मिट्टी में वह पली-बढ़ी, उससे ही वह बचना चाहती है।

7. काँच और हीरे का अर्थ स्पष्ट करते हुए बताइए कि कब इनके बीच का भेद जानना बाकी न रहेगा?
[CBSE 2010 (Term-I)]

उत्तर : लेखक का कथन है कि वर्तमान पीढ़ी साफ़-सुथरे काँच को अधिक पसंद करती है किंतु मिट्टी में सने हीरे उसे दिखाई नहीं देते। जिस दिन वे इसे पहचान जाएँगे, उस दिन वे केवल हीरे को ही प्रेम करने लगेंगे। तब इनके बीच का भेद जानना बाकी न रहेगा।

(ग) निबंधात्मक प्रश्नोत्तर

1. लेखक ने वर्तमान नगरीय सभ्यता पर क्या व्यंग्य किया है तथा क्यों?

उत्तर : लेखक ने नगरीय सभ्यता पर व्यंग्य करते हुए कहा कि वह आसमान में अपना घर बनाना चाहती है क्योंकि वह धूल से बचना चाहती है। इसलिए अपने बच्चों को धूल में खेलने से रोकती है। 'धूल' पाठ में यह व्यंग्य किया गया है कि नगरीय सभ्यता में सहजता के स्थान पर बनावटीपन पर ज़ोर रहता है। वे लोग वास्तविक सौंदर्य को नहीं पहचानते। इस सभ्यता के लोगों को चकाचौंध पैदा करने वाली चीज़ें ही प्रिय हैं। उन्हें प्राकृतिक सौंदर्य पसंद नहीं। यह सभ्यता धूल से बचने का प्रयास करती है क्योंकि वह स्वयं बनावटी जिंदगी जीती है। लेखक चाहते हैं कि नगरीय सभ्यता यथार्थ के धरातल पर रहे और धूल के महत्त्व को जाने।

2. पाठ के आधार पर धूल-धूलि, धूली और धूरि की अभिन्नता को समझाइए।

उत्तर : लेखक धूल, धूलि, धूली, धूरि आदि में भिन्नता व्यक्त करते हुए कहते हैं कि धूल का जीवन उस गद्य के समान है जो वास्तविकता के दर्शन कराता है और धूलि उस वास्तविकता का काव्य रूप है। धूली को लेखक ने छायावादी दर्शन बताते हुए उसकी वास्तविकता को संदिग्ध बताया है। धूरि लोक संस्कृति का नवीन जागरण है अर्थात धूरि में खेलकर बच्चे नए समाज का निर्माण करेंगे।

इन सबका रंग एक ही है, रूप में भिन्नता जो भी हो। मिट्टी काली, पीली, लाल तरह-तरह की होती है, लेकिन धूल कहते ही शरत् के धुले-उजले बादलों का स्मरण हो जाता है। धूल के लिए श्वेत नाम का विशेषण अनावश्यक है, वह उसका सहज रंग है।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

फ़ॉरमेटिव असेसमेंट के लिए

श्री रामविलास शर्मा द्वारा लिखित 'धूल' नामक पाठ के आधार पर 'धूल के महत्व' अथवा 'शहरी सभ्यता और धूल' विषय पर **वाद-विवाद** का आयोजन किया जा सकता है।

क्रियाकलाप

वाद-विवाद

मौखिक अभिव्यक्ति के विकास और मूल्यांकन की दृष्टि से 'वाद-विवाद' का स्थान सर्वोपरि है। दैनंदिन जीवन से संबंधित समाज की विभिन्न समस्याएँ 'वाद-विवाद' का विषय बन सकती हैं।

वाद-विवाद से संबंधित जानकारियाँ–

- विद्यार्थी को हर स्थिति में, चाहे वह पक्ष में बोले या विपक्ष में, आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए।
- उचित शब्द-प्रयोग, स्पष्ट एवं शुद्ध मानक उच्चारण और निर्दोष सरल भाषा का व्यवहार करें।
- आवश्यकतानुसार सूक्तियों, कथनों और उदाहरणों का यथोचित उल्लेख करें।
- उचित हाव-भाव का प्रदर्शन करें। क्रोधादि तीव्र आवेशों का प्रदर्शन कभी न करें। संयत रहें।
- अपने वक्तव्य की समाप्ति के बाद सबको धन्यवाद दें।

विशेष जानकारियाँ–

- वाद-विवाद प्रारंभ करने से पूर्व **संबोधन** ———— माननीय अध्यक्ष महोदय/श्रद्धेय प्रधानाचार्य महोदय/आदरणीया प्रधानाचार्या महोदया, सम्मानित अध्यापक-अध्यापिकागण एवं निर्णायकगण तथा प्रिय साथियो!
- **विषय-आरंभ**—आज हमारे वाद-विवाद का विषय है '————' और मैं इसके पक्ष/विपक्ष में बोलना चाहूँगा कि ———— ।
- **प्रस्तुतीकरण**—सर्वप्रथम विषय के पक्ष या विपक्ष में संकेत-बिंदुओं को लिख लें। फिर उन्हें क्रमपूर्वक विस्तार दें।
- अपनी लिखी हुई विषय-वस्तु को अध्यापक-अध्यापिका को दिखाकर उनमें संशोधन करें।
- तब मौखिक वाचन का अभ्यास करें।
- अंत में धन्यवाद-ज्ञापन समय का ध्यान रखें।

'ग्रामीण संस्कृति और धूल' अथवा 'धूल के महत्व' के पक्ष में–

- ग्रामीण संस्कृति धूल को महत्वपूर्ण मानती है।
- धूल के बिना ग्राम-शिशु की कल्पना नहीं की जा सकती।
- फूलों के ऊपर रेणु और शिशु के मुख पर छाई धूल सहज पार्थिवता को निखार देती है।
- अखाड़े की मिट्टी से सनी हुई देह सुडौल शरीर का परिचय देती है।
- 'गोधूलि' कहते ही मानस पटल पर अनूठी ग्राम-शोभा नाचने लगती है।
- धूल को माथे से लगाना देशभक्ति का परिचायक।

विपक्ष में

- शहरी सभ्यता में धूल त्याज्य है।
- यहाँ का अभिजात वर्ग विभिन्न प्रसाधन सामग्रियों का उपयोग करना अपनी शान समझता है।
- शहरों में अखाड़ों के स्थान पर 'जिम' खुल गए हैं जहाँ धूल का नामोनिशान नहीं।
- हमारी आधुनिक सभ्यता हमें धूल से बचना सिखाती है।
- 'धूल में मिला देना' मुहावरा धूल के निकृष्ट रूप को उजागर करता है।

इस प्रकार छात्र-छात्राओं को 'धूल' पर बोलने के लिए प्रोत्साहित करें।

कक्षा-कार्य

कक्षा में निम्नलिखित प्रश्न पूछे जा सकते हैं–

- 'गोधूलि' शब्द से आप क्या समझते हैं?
- शहर में 'गोधूलि' दुष्प्राप्य क्यों है?
- शहरी धूल के कारण आजकल कौन-कौन सी बीमारियाँ फैल रही हैं?

गृह-कार्य

- छात्र-छात्राएँ वाद-विवाद की तैयारी करें।
- धूल से संबंधित मुहावरों का चयन करके उन्हें याद करें।

GOYAL BROTHERS PRAKASHAN

© GOYAL BROTHERS PRAKASHAN